प्रथम विश्वयुद्ध के प्रभाव या परिणामों का वर्णन

B.A. II, (History Hon's)

1914 से 1918 ई० का प्रथम विश्व-युद्ध इससे पूर्व के समस्त युद्धों से अधिक भयंकर एवं विनाशकारी था। इस युद्ध ने विश्व की सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक आदि स्थितियों पर व्यापक एवं दूरगामी प्रभाव डाले।

① जनशक्ति का विनाश → इस महायुद्ध में कुल मिलाकर 80 लाख आदमी मारे गये। घायलों की संख्या एक करोड़ नब्बे लाख रही, जिसमें साढ़े लाख ऐसे घायल भी शामिल हैं जो बिलकुल अपाहिज हो गये थे। जर्मनी और उसके सहयोगियों के तीस लाख आदमी मारे गये, और अस्सी लाख घायल हुए। मित्रराष्ट्रों के पचास लाख आदमी मरे, और एक करोड़ दस लाख घायल हुए। इसके अतिरिक्त, सत्तर लाख से अधिक आदमी दोनों पक्षों में मिला कर ऐसे थे, जो लापता थे। इस प्रकार महायुद्ध में तीन करोड़ बीस लाख आदमी या तो तोप से मारे गये, या लापता हो गये या बुरी तरह से घायल हुए। दोनों पक्षों ने कुल मिलाकर छः करोड़ सैनिक व उनके सहायक भरती किये थे। इनमें से आधे से भी अधिक युद्ध में घुस आ गये। संसार के इतिहास में इससे पहले शायद कोई ऐसा युद्ध नहीं हुआ, जिसमें इतने मनुष्यों का संहार हुआ हो।

इस महायुद्ध में सैनिकों के अतिरिक्त नागरिकों ने भी अपनी जान गवायी। बड़े पैमाने पर अमेरिका तथा ब्रिटिश नागरिक जलयान डूबने तथा हवाई गोलाबारी के शिकार हुए। महायुद्ध के बाद जो महामारियाँ यूरोप में फैलीं, उनसे चालीस लाख से भी अधिक आदमी मृत्यु को प्राप्त हुए। सैनिकों और नागरिकों का करोड़ों की संख्या में यह संहार बहुत ही भयंकर था। युद्ध में जो सैनिक मारे गये, वे सब जवान थे। उनका इतनी बड़ी संख्या में मारा जाना यूरोप के लिये बहुत ही हानिकारक हुआ।

② सम्पत्ति का विनाश → महायुद्ध में कितना खर्च हुआ, इसका हिसाब अर्थशास्त्रियों ने इस प्रकार लगाया है। साढ़े अट्ठावन हजार करोड़ (585,000,000,000) की विशाल धन-राशि चार वर्षों के युद्ध

में सम्मिलित दोनों पक्षों ने फूँक कर धर दी। सन 1918 में संयुक्त राज्य अमेरिका की सारी सम्पत्ति इससे अधिक कीमत नहीं रखती थी। ब्रिटिश साम्राज्य की सम्पूर्ण सम्पत्ति की कीमत भी इस विशाल धनराशि से कम थी। इसमें से एक तिहाई खर्च जर्मनी और उसके साथियों का हुआ, और दो तिहाई मित्रराष्ट्रों का। महायुद्ध का औसतन दैनिक खर्च चालीस करोड़ रुपया था, और 1918 में तो इस खर्च का औसत साढ़े तीन करोड़ रुपया प्रति घंटा (132000,000,0000) तेरह हजार दो सौ करोड़ पड़ता था। इसके अतिरिक्त इस महायुद्ध में सम्मिलित देशों की अतिरिक्त सम्पत्ति का भी विनाश हुआ।

इस असाधारण खर्च के कारण संसार के सार्वजनिक ऋणों की मात्रा में भी असाधारण रूप से वृद्धि हो गई। 1914 में दोनों पक्षों के प्रमुख राज्यों का कुल सार्वजनिक ऋण आठ हजार करोड़ था, 1918 में यह बढ़कर चालीस हजार करोड़ हो गया। सार्वजनिक ऋण की मात्रा में पाँच गुने की वृद्धि हो जाना यह भलीभाँति सूचित करता है, कि युद्ध में सम्मिलित राज्यों को किस प्रकार ऋण के बोझ से लद जाना आवश्यक हो गया था।

इतने भारी धन-विनाश का परिणाम यह हुआ, कि वस्तुओं की कीमतें बढ़ने लगीं, मजदूरी की दर भी ऊँची उठने लगी, पैदावार बहुत कम रह गई, मुद्रा की कीमत बुरी तरह नीचे जानी शुरू हुई, और व्यापार व्यवसाय के क्षेत्रों में एक प्रकार की अव्यवस्था सी उत्पन्न हो गई। सरकारों को अपना बजट बराबर करना कठिन हो गया। नये टैक्स लगाये गये, और लोग सब तरह से आर्थिक संकट का अनुभव करने लगे। इस दशा से छुटकारा पाने के लिये यूरोप को कई वर्ष लगे।

(रिपब्लिकन की स्थापना)
* 1814 में यूरोप में सिर्फ 1 राज्य में भी
* 1914 के समय, फ्रांस, स्विट्जरलैण्ड, पुर्तगाल, सान मरीनो, अंडोरा
* After 1918 – 10 Rep. Established – Rus, Cez, Aus, Pol, Check, Litha, Lativia, Asthonesia, Finland, Ukr, Ger

* राजनीतिक परिणाम –

(1) निरंकुश शासनों का अंत → चूँकि महायुद्ध के बीच ही रूस में साम्यवादी क्रांति हुई जिसके परिणामस्वरूप वहाँ से जारशाही का अंत हो गया। महायुद्ध के अंत होते ही पूरे यूरोप में रिपब्लिक की स्थापना और तेज हो गई। अब जर्मनी, आस्ट्रिया-हंगरी के प्राचीन गौरवशाली राजवंशों का अन्त होकर ~~इन सब देशों में रिपब्लिक स्थापित~~ हुई। बल्गेरिया का राजवंश भी देर तक कायम नहीं रह सका, और कुछ साल बाद 1925 में तुर्की में भी सुल्तान के एक-तन्त्र शासन का अन्त हो गया। निःसन्देह, 1918 में महायुद्ध की समाप्ति पर संसार में एक भारी क्रान्ति हुई जो ~~अपने~~ जिसने

कई निरंकुश शासनों का अंत कर दिया।

(4) नई रिपब्लिकों की स्थापना → 1914 में जब महायुद्ध का प्रारम्भ हुआ, तो फ्रांस, स्विट्ज़रलैण्ड और पोर्तुगाल केवल तीन महत्वपूर्ण देश ऐसे थे, जहाँ रिपब्लिक विद्यमान थीं। इन तीन के अतिरिक्त दो अन्य छोटे राज्यों सन मरीनो और अन्दोरा में भी रिपब्लिकन शासन की सत्ता थी। इसमें सन्देह नहीं, कि उन्नीसवीं सदी में यूरोप में लोकतंत्रवाद का काफी विस्तार हुआ। ~~पर इस कुशल की जनता इतने~~ ~~से ही~~ पर अब महायुद्ध के परिणामस्वरूप यूरोप में रिपब्लिकों की बाढ़ सी आ गई। रूस, जर्मनी, आस्ट्रिया, पोलैण्ड, चेकोस्लोवाकिया, लिथुएनिया, लैटविया, एस्थोनिया, फिनलैण्ड और युक्रेनिया ये दस नई रिपब्लिकें अब यूरोप में कायम हुई। यूरोप के बाहर एशिया और अफ्रीका में भी बहुत सी नई रिपब्लिकें इस समय स्थापित हुई, और संसार में बहुसंख्यक राज्यों में ऐसा शासन कायम हुआ। 1924 में टर्की से भी दैवी राजा का अन्त हो गया, और अठारहवीं सदी का यह सर्वमान्य सिद्धान्त अब केवल जापान की ही सम्पत्ति रह गया। जिन देशों में अभी वंशानुगत राजा रह भी गये, वहाँ भी जनता का शासन में अधिकार बढ़ने लगा, और लोकतन्त्रवाद बड़ी तेजी के साथ प्रगति करने लगा।

(5) राष्ट्रीयता की भावना का चरम विकास - प्रथम महायुद्ध की समाप्ति पर यह सिद्धान्त एक सत्य के रूप में स्वीकृत कर लिया गया था कि राज्यों का निर्माण राष्ट्रीयता के अनुसार होना ~~चाहिये~~ चाहिये। पेरिस की शान्ति - परिषद ने राष्ट्रीयता के आधार पर यूरोप का पुनः निर्माण करने का प्रयत्न किया, और आठ नये राज्य यूरोप के नक्शे पर प्रकट हुए। ये राज्य चेकोस्लोवाकिया, यूगोस्लाविया, पोलैण्ड, लिथुएनिया, फिनलैण्ड, एस्थोनिया और हंगरी थी। इसमें सन्देह नहीं, कि इन राज्यों के निर्माण से यूरोप का नक्शा बहुत कुछ राष्ट्रीयता के सिद्धान्त के अनुसार बन गया था।

पर अभी राष्ट्रीयता की दृष्टि से अनेक ऐसी समस्याएँ बच रही थीं जिनका हल होना बाकी था। ~~आयरलैण्ड अभी तक भी ग्रेट ब्रिटेन~~ आयरलैण्ड, मिस्र और भारत पर अभी भी ब्रिटेन का आधिपत्य था। फिलीपीन अमेरिका के और कोरिया जापान के अधीन थे।

अफ्रीका में यूरोपवालियों के बड़े उपनिवेश थे। इन सबके सम्बन्ध में राष्ट्रीयता या स्वभाग्यनिर्णय के सिद्धान्तों का अभी प्रयोग नहीं हुआ था। साथ ही, यूरोप में भी जो नये राज्य अब कायम किये गये थे, उनकी सीमाओं के सम्बन्ध में अनेक विवाद थे। ये प्रदेश किस राज्य में रहें, इनका फैसला हो सकना सुगम बात न थी। पेरिस की शान्ति-परिषद् में इनके सम्बन्ध में जो निर्णय हुए, उनके प्रति तीव्र असन्तोष था।

(6) लोकतंत्रवाद के विरुद्ध प्रतिक्रिया – युद्ध के समय प्रायः सभी राज्यों के लिये यह आवश्यक हो गया था, कि उनकी सरकारें असाधारण शक्ति और अधिकार प्राप्त कर लें। सैनिक आवश्यकता की दृष्टि से यह उपयोगी भी था। युद्ध का सुचारु रूप से संचालन तभी हो सकता था, जब सरकारें लोकमत की परवाह किये बिना और पार्लियमेंट से हर बात पूछे बिना, जिस समय जो कुछ जरूरी हो, उसे कर सकने का पूरा अधिकार रखती हों। साथ ही, युद्ध की दृष्टि से ही यह भी आवश्यक था, कि प्रेस पर कड़ी निगाह रखी जाय। जो लोग युद्ध से सहानुभूति न रखते हों, उनका दमन किया जाय। इसका परिणाम यह हुआ कि युद्ध ~~समाप्ति के बाद~~ काल में प्रायः सभी देशों की सरकारें बहुत कुछ स्वेच्छाचारी व एकतन्त्र हो गईं। जब युद्ध समाप्त भी हो गया, तो भी उस समय की असाधारण राजनीतिक व आर्थिक परिस्थितियों के कारण सरकारों के ये अबाधित अधिकार जारी रहे। इसी का परिणाम यह हुआ, कि इटली और स्पेन में लोकतन्त्रात्मक शासनों का अन्त होकर एक वर्ग विशेष या दल-विशेष का शासन कायम हुआ। यही प्रवृत्ति आगे चलकर जर्मनी में प्रकट हुई, और धीरे-धीरे यूरोप के अनेक देशों में वे शासन स्थापित हुए, जिन्हें राजनीतिक परिभाषा में 'फ़ैसिस्ट' कहा जाता है। इन फ़ैसिस्ट शासनों में जनता की शक्ति का अन्त होकर एक राजनीतिक दल या प्रबल नेता के हाथों में सब राजशक्ति आ जाती थी।

(7) अन्तर्राष्ट्रीयता का विकास – महायुद्ध का सबसे महत्वपूर्ण राजनीतिक परिणाम अन्तर्राष्ट्रीयता का विकास था। संसार के ~~किसी~~ विविध राज्यों को किसी न किसी अन्तर्राष्ट्रीय संगठन में संगठित होना चाहिये, यह विचार नया नहीं था। पर महायुद्ध के विनाश के कारण इस प्रकार के संगठन की आवश्यकता बहुत प्रबल रूप से अनुभव की जाने लगी। इसी

Scanned with CamScanner

कारण राष्ट्रपति विल्सन ने पेरिस की शान्ति-परिषद में राष्ट्रसंघ की स्थापना के लिए बहुत जोर दिया, और उसे वर्साय की सन्धि में प्रमुख स्थान दिया। अन्तर्राष्ट्रीयता के विचार को क्रिया में परिणत करने के लिये जो क्रियात्मक कदम इस समय उठाये गये, उसमें मुख्य निम्नलिखित थे — (1) राष्ट्रसंघ (2) अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय, और (3) अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर संघ।

सामाजिक परिणाम

(8) मजदूर-आन्दोलन → महायुद्ध के समय में काम करने वाले मजदूरों का महत्व बहुत बढ़ गया था। करोड़ों की संख्या में नवयुवकों के लड़ाई के मैदान में चले जाने से मजदूरी करने वालों की कमी हो गई थी। लड़ाई में विजय के लिये जितनी आवश्यकता सैनिकों की थी, उतनी ही अस्त्र-शस्त्रों व अन्य युद्धोपयोगी सामग्री की भी थी। इस सामग्री को कारखाने ही तैयार करते थे, और कारखाने मजदूरों के बिना नहीं चल सकते थे। परिणाम यह हुआ, कि मजदूर श्रेणी में अपनी महत्ता की एक नई अनुभूति उत्पन्न हुई। मजदूर लोग न केवल यह आन्दोलन करने लगे, कि उन्हें अधिक वेतन मिलना चाहियें, उनके काम करने के घंटों में कमी होनी चाहिये, उनके रहन-सहन में उन्नति तथा आराम का प्रबन्ध होना चाहिये, अपितु व्यवसायों के संचालन में उनका वैसा ही हाथ होना चाहिये, जैसा कि पूंजीपतियों का होता है। इसके लिये उन्होंने अनेक संघों की स्थापना की, और इस आन्दोलन को बहुत प्रबल कर दिया कि युद्ध में विजय का प्रधान श्रेय मजदूरों को है, और समाज व राज्य में उनकी स्थिति अधिक महत्व की होनी चाहिये। राजनीतिक क्षेत्र में मजदूर दलों की स्थापना हुई, और धीरे-धीरे मजदूर श्रेणी का शासन में महत्व बढ़ने लगा।

(9) स्त्रियों की स्थिति → महायुद्ध में करोड़ों की संख्या में पुरुष लड़ाई के मैदान में चले गये थे। जीवन के अनेक क्षेत्रों में काम करने के लिये अब स्त्रियों को आगे बढ़ना पड़ा। दफ्तर, ट्रम, बस, दुकान और कारखानें — सब जगह अब पुरुषों का स्थान स्त्रियाँ लेने लगीं। युद्ध की आवश्यकता से विवश होकर स्त्रियों को बहुत बड़ी संख्या में घर छोड़कर आर्थिक जीवन में आना पड़ा। बड़े-बड़े कारखानों में कठिन काम करने के लिए भी स्त्रियों ने हाथ बढ़ाया। यह एक भारी

सामाजिक क्रान्ति थी। अब स्त्रियों में यह भावना बहुत ही प्रबल हो गई थी, कि उनका कार्यक्षेत्र केवल घर की चहारदीवारी ही नहीं है अपितु वे सब क्षेत्रों में पुरुषों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाती हुई काम कर सकती है। इसका परिणाम यह हुआ, कि प्रायः सभी यूरोपियन देशों में स्त्रियों को वे सब राजनीतिक अधिकार दिये गये, जिनसे वे अब तक वंचित थी। वोट का अधिकार उन्हें प्राप्त हुआ और वे भी पार्लियामेंट का सदस्य बनने के लिए अपने को पेश करने लगी। स्त्रियों को पुरुषों के समान सामाजिक और राजनीतिक स्थिति प्राप्त करने में महायुद्ध अधिक सहायता दी।

(10) नसलों की समानता → महायुद्ध से पहले यूरोप के लोगों में अपने वर्ण और नसल की उत्कृष्टता की भावना बहुत प्रबल थी। यूरोपियन लोग समझते थे, कि श्वेतांग लोग सबसे उत्कृष्ट हैं, और एशिया व अफ्रीका के काले, भूरे व पीले रंग के लोग उनकी अपेक्षा बहुत हीन हैं। ~~इन महाद्वीपों~~ पर युद्ध की आवश्यकता से विवश होकर भारत, अफ्रीका, जापान आदि से बहुत-से सैनिक यूरोप में आये, और उन्होंने जर्मनी व उसके साथियों के गौरांग सैनिकों के साथ डटकर लड़ाई की। भारत व अफ्रीका के सिपाही यूरोप के सिपाहियों से किसी भी प्रकार हीन नहीं हैं, यह बात अब भली भाँति सिद्ध हो ~~गया~~ गई, और इसका स्वाभाविक परिणाम यह हुआ, कि यूरोपियन नसलों की उत्कृष्टता का विचार बिल्कुल निराधार साबित हो गया। सब नसलें एक समान हैं, कोई उत्कृष्ट या हीन नहीं है - इस विचार द्वारा संसार ~~है~~ में अन्तर्राष्ट्रीयता और सुख-शान्ति स्थापित होने का मार्ग बहुत कुछ निष्कण्टक हो गया।

(11) धर्म के सम्बन्ध में सन्देह → महायुद्ध के समय में दोनों पक्षों के चर्च अपने-अपने राज्य के पक्ष को न्यायसंगत व धर्मानुकूल बताते थे, और ईश्वर से प्रार्थना करते थे, कि उनके पक्ष की विजय हो। फ्रांस, जर्मनी, आस्ट्रिया - सब ईसाई धर्म के अनुयायी थे। सबका एक ईश्वर, एक धर्म-पुस्तक और एक धार्मिक सिद्धान्त था। यदि ईसाई चर्च के नेता यह समझते, कि युद्ध के साथ उनका कोई सम्बन्ध नहीं, चर्च का उद्देश्य तो दुःखी मानव-जाति की समान रूप से सेवा करना है, युद्ध को बन्द कर शान्तिस्थापना के लिये प्रयत्न करना धर्म के नेताओं का मुख्य कार्य है - तो धर्म के प्रति जनता में श्रद्धा बढ़ती। पर ~~सब~~ राज शक्ति से अभिभूत होकर

Scanned with CamScanner

पादरियों ने संस्कारों के अच्छे बुरे सब प्रकार के कार्यों का समर्थन शुरू किया, और जनता को यह भी कहना प्रारम्भ किया, कि युद्ध में अपने राज्य का पूर्ण रूप से समर्थन करना उनका सबसे बड़ा धार्मिक कर्तव्य है। ईसाई धर्म के नाम पर यही बात मित्रराष्ट्रों के पादरी कहते थे, और यही बात जर्मनी व उसके साथी देशों के पादरी कहते थे। जर्मनी के गिरजों में भगवान से प्रार्थना की जाती थी, कि मित्रराष्ट्र पराजित हो जायें, और फ्रांस के गिरजों में जर्मनी के विनाश के लिये प्रार्थनायें होती थीं। धर्म और भगवान का यह कैसा बीभत्स उपहास था। विज्ञान की उन्नति से पहले ही ईसाई धर्म के सम्बन्ध में एक प्रकार की सन्देह की भावना लोगों में पैदा हो गई थी। अब युद्ध के समय में यह प्रवृत्ति और भी बढ़ गई। यूरोप में एक प्रकार की नास्तिकता की लहर जोर पकड़ने लगी। रूस में इसने बड़ा उग्र रूप धारण किया, और वहाँ से ईसाई चर्च प्राय: नष्ट ही हो गया।

(12) शिक्षा और विज्ञान → महायुद्ध के कारण शिक्षा को बहुत नुकसान पहुँचा। उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले नवयुवक बाधित सैनिक सेवा के कारण बड़ी संख्या में युद्ध क्षेत्र में चले गये। बहुत से अध्यापकों को भी पुस्तकें छोड़ कर बन्दूकें हाथ में लेनी पड़ी। अनेक विश्वविद्यालय और कॉलिज बन्द हो गये। पर शिक्षा के क्षेत्र में जो क्षति हुई, वह विज्ञान की उन्नति ने बहुत कुछ पूरी कर दी। युद्ध के समय में वैज्ञानिक लोगों ने अपनी सारी ताकत को नये-नये आविष्कारों में लगा दिया। विज्ञान के प्राय: सभी क्षेत्रों में इस समय नये-नये आविष्कार हुए। इसमें सन्देह नहीं, कि युद्ध की आवश्यकताओं से विवश होकर विज्ञान के क्षेत्र में जो उन्नति हुई, उसके कारण मानव समाज प्रगति के मार्ग पर बहुत आगे बढ़ गया।

Scanned with CamScanner